सुन्द
१

[illegible]

ॐ श्रीगणेशाय नमः श्रीगुरवे नमः ... श्रीरामाय नमः श्रीमहावीरहनु

मते नमः अथ सुन्दरकाण्ड लिख्यते ॥ शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ब्रह्म

शम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं [illegible] रगुरुं मायामनु

ष्यं हरिं वन्देऽहं करुणाकरं [illegible] नान्या स्पृहा रघुपते हृदये

ऽस्मदीये सत्यं वदामि च भवान [illegible] रां मे कामादिदो

षरहितं कुरु मानसं च ॥२॥ [illegible] ज्ञानिना

मग्रगण्यं सकलगुणनिधानं [illegible] जातं नमामि ॥३॥

चौपाई ॥ जामवंत के बचन [illegible] तब लगि मोहि परिखेहु

भाई सहि दुख कंद मूल फल खाई [illegible] हरष बिसेषी

यह कहि नाइ सबन्हि कहुं माथा चलेउ हरषि हियं धरि रघुनाथा सिन्धु तीर इक सुन्दर

भूधर कौतुक कूदि चढेउ ता ऊपर बार बार रघुबीर संभारी तरकेउ पवनतनय बल भा

[illegible]

सुंद
२

आननकीन्हा अतिलघुरूप पवनसुतलीन्हा बदनपैठिपुनिबाहिरआवा मांगात
बिदाताहिसिरनावा मोहिसुरनजेहिलागिपठावा बुद्धिबलमर्मतोरमैंपावा॥२॥दो
हा॥रामकाजसबकरहु तुमबलबुद्धिनिधान आसिषदेइगईसोहरषचले
हनुमान॥चौपाई॥ [illegible]॥ निसिचरएकसिंधुमहंरहही करिमा
यानभकेखगगहही जीवजंतुजेगगनउड़ाही जलबिलोकितिनकीपरछाहीं गहैछा
हसकनउड़ाई इहिविधिसदागगनचरखाई सोइछलहनुमानतेकीन्हा तासुकप
टकपितुरतहिचीन्हा ताहिमारिमारुतसुतबीरा बारिधिपारगयोमतिधीरा तहांजा
इदेखिबनसोभा गुंजतचंचरीकमधुलोभा नानातरुफलफूलसुहाये खगमृगबृ
ददेखिमनभाये सैलबिसालदेखिइकआगे तापरकूदचलयोभयत्यागे उमानक
छुकपिकअधिकाई प्रभुप्रतापजोकालहिखाई गिरिपरचढिलंकातेहिदेखी कहिन
जाइअतिदुर्गविसेषी अतिउतंगजलनिधिचहुंपासा कनककोटकरपरमप्रकासा॥३

सो जेहिगिरिचरनदेइहनुमंता चलेउसोगापातालतुरंता जिमिअमोघरघुपतिकेबा
ना एहिभांतिचलाहनुमाना जलनिधिरघुपतिदूतविचारी कहिमैनाकहोहुस्रमहा
रीभार॥ सोरठा॥ सिंधुवचनसुनिकान तुरतउठेउमैनाकतब कपिकहंकीनप्रनाम
मारिवारिकरजोरकै॥ दोहा॥ हनुमानतेहिपरसाकर पुनिकीन्हिप्रनाम रामका
जकीन्हेविना मोहिकहांविश्राम॥ चौपाई॥ जातपवनसुतदेवनदेषा जानेकहुंबल
बुद्धिविशेषा सुरसानामअहिनकीमाता पठियउआइकहितेइंबाता आजुसुरनमो
हिदीनअहारा सुनिहंसिबोलपवनकुमारा रामकाजकरिफिरिमैआवों सीताकरि
सुधिप्रभुहिसुनावों तवतववदनपैठिहोंआई सत्यकहोंमोहिजानदेमाई कवनि
हुंयतनदेइनहिजाना ग्रसिनमोहिकहाहनुमाना योजनभरितेइंबदनपसारा
कपितनुकीदुगुणविस्तारा सोरहयोजनमुखतेइंठयऊ तुरतपवनसुतवत्तिसभ
यऊ जसजससुरसावदनवढावा तासुदुगुणकपिरूपदिखावा सतयोजनतेइं

सुं०द
४

उठि सैल सो लंका जोरि पानि कर बिनय ससंका जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा चलत बिरंचि कहा
मोहि चीन्हा जेतना मन ... रही भक्त हेतु मनुजतनु धरही तिनकी बिपद बने
हरि जाये सब आपदनाइ ... ऐसे बिकल होसि जब कपि के मारे तब जानेसु निसिचर सं-
घारे तात मोर अति पुन्य बहूता देखेउँ नयन राम कर दूता॥४॥ दो०॥ तात स्वर्ग अपबर्ग
सुख धरिअ तुला एक अंग। तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥ चौ०॥ प्रबिसि न-
गर कीजै सब काजा हृदय राखि कोसलपुर राजा गरल सुधा रिपु करहि मिताई गोपद सिंधु
अनल सितलाई गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही राम कृपा करि चितवहि जाही अति लघु रूप धरेउ
हनुमाना पैठा नगर सुमिरि भगवाना मन्दिर मन्दिर प्रति करि सोधा देखे जहँ तहँ अगनित
जोधा गयो दसानन मन्दिर माहीं अति बिचित्र कहि जात सो नाही सयन किये देखा कपि ते-
ही मन्दिर महुँ न दीखि बैदेही भवन एक पुनि दीख सुहावा हरिमन्दिर तहँ भिन्न बनावा
रामनाम अंकित गृह सोहा बरनि न जाइ देखि मन मोहा ॥५॥ दो०॥ रामनाम अंकित ब

छंद॥ कनककोट विचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना चउहट हाट सुबट बीथी चारु पु
र बहुबिधि बना गज बाजि षचर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै बहुरूप निसिचर
जूथ अतिबल सेन बरनत नहि बनै बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं ऽ
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनिमन मोहहीं कहु मल्ल देह बिसाल सैल समान अति ब
ल गर्जहीं नाना अषारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं करि जतन भट कोटिन्ह बिकट
तनु नगर चहु दिसि रछहीं कहु महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भछहीं एहि लै
गि तुलसीदास इन्हकी कथा संक्षेप हि कही रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहैं स
ही॥ दोहा॥ पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार॥ अति लघु रूप धरौं निसि नग
र करौं पैसार॥ ३ ॥ चौ॥ मसक समान रूप कपि धरी लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी नाम
लंकिनी एक निसिचरी सो कह चलेसि मोहि निंदरी जानेहि नाहि मरम सठ मोरा मोर अहार
जहां लगि चोरा मुठिका एक महा कपि हनी रुधिर बमत धरनी ढनमनी पुनि संभार

सुंदर
४

करहिंसदासेवकपरप्रीती कहोकवनमैंपरमकुलीना कपिचंचलसबहींबिधिहीना प्रातले
इजोनामहमारा तादिनताहिनमिलैअहारा॥७॥ दो॰॥ असमैंअधमसंषासुनजूमोहूप
रघुबीर कीन्हकृपासुमिरगुनभरेबिलोचननीर॥ चौपाई॥ जानतहूंअससामिबिसारी
फिरितेकाहेनहोहिंदुषारी इहबिधिकहतरामगुनग्रामा पावाअनिर्बाच्यबिश्रामा पुनि
सबकथाबिभीषनकही जेहिबिधिजनकसुताजहँरही तबहनुमंतकहासुनुभ्राता देखी
चहौंजानकीमाता जुक्तिबिभीषनसकलसुनाई चलेउपवनसुतबिदाकराई धरिपुनि
रूपगयोपुनितहिंवा बनअशोकसीतारहजहिंवा देखिमनहिंमनकीनप्रनामा बैठे
बीतगईनिशियामा कृशतनुसीसजटाइकबेनी जपतहृदयरघुपतिगुनश्रेनी॥८
दो॰॥निजपदनयनदियेमनरामचरनमहँलीन परमदुखीभापवनसुत निरखि
जानकीदीन॥८॥ चौ॰॥ तरुपल्लवमहँरहालुकाई करैंबिचारकरौंकाभाई तेहिअवस
रावनतहँआवा संगनारिबहुकियेबनावा बहुबिधिखलसीतहिसमुझावा साम

सह सोभा वरनि न जाइ नव तुलसीके व्रन्द वहु देषि हरष कपिराइ॥ दो॰ ५॥ लंकानि
सिचर निकर निवासा इहाँ कहाँ सज्जन कर वासा मन महुं तर्क करन कपि लागा ताहि सम
य विभीषण जागा राम राम तेहि सुमिरण कीन्हा हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा इहि सन
हठि करिहौं पहिचानी साधु ते होइ न कारज हानी विप्ररूप धरि वचन सुनाया सुनत वि
भीषण उठि तहं आया करि प्रणाम पूछी कुसलाई विप्र कहौ निज कथा बुझाई कैतुम हरिदा
सन महं कोई मोरे हृदय प्रीति अति होई कैतुम दीन बंधु अनुरागी आयेउ मोहि करन बड
भागी॥ ई॥ दोहरा॥ तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम सुनत युगल तन पुलक अति
मगन राम गुण ग्राम॥ चौ॰ ५ सुनहु पवनसुत रहनि हमारी जिमि दशनन महं जीभ विचा
री तात कवहुं मोहि जानि अनाथा करिहैं कृपा भानुकुलनाथा तामस तनु कछु साधन ना
हीं प्रीति न पद सरोज मन माहीं अव मोहि भा भरोस हनुमंता विनु हरिकृपा मिलहिं नहीं
संता जौ रघुवीर अनुग्रह कीन्हा तौ तुम मोहि दरश हठि दीन्हा सुनहु विभीषण प्रभु की रीती

सुंदर
१

ई मासदिवसमहंकहानमाना तौमैंमारबकाढिकृपाना॥१०॥दो० रा॥भवनगयौदस
कंधरइहांपिसाचिनवृन्द सीतहित्रासदिखावहीं धरिहिंरूपबहुमन्द॥ चौ०
त्रिजटानामराक्षसीएका रामचरणरतिनिपुनबिबेका सबहिंबुलाइसुनायसिसपना
सीतहिंसेइकरौहितआपना सपनेबानरलंकाजारी जातुधानसेनासबमारी खरआरू
ढनगनदससीसा मुंडितसिरखंडितभुजबीसा एहिबिधिसोदक्षिणदिशिजाई लं
कामनहुंबिभीषणपाई नगरफिरीरघुबीरदुहाई तबप्रभुसीताहिबोलिपठाई यह
सपनामैंकहौंपुकारी होइहिसत्यगयेदिनचारी तासुबचनसुनितेसबडरी जनकसुता
केचरनपरी॥११॥ जहांतहां गईसकलतब सीताकेमनसोच मासदिवसबीते
मोहिमारिहिनिशचरपोच॥ चौ०॥ त्रिजटासनबोलिकरजोरी मातुबिपतसंगनितैंमो
री तजौंदेहकरोबेगिउपाई दुसहबिरहअबसहानजाई आनुकाठरचुचिताबना
ई मातुअनलपुनिदेउलगाई सत्यकरहुममप्रीतिसयानी सुनैकोश्रवणसूलसमबानी

दामभयभेददिखावा कहइरावनसुनुसुमुखिसयानी मंदोदरीआदिसबरानी तवअनु
चरीकरौपनमोरा एकबारबिलोकुममओरा त्रणधरिओटकहतिवैदेही सुमिरिअवधप
तिपरमसनेही सुनुदसमुखखद्योतप्रकासा कबहुंकिनलिनीकरहिंविकासा असमनस
मुझिकहतिजानकी खलसुधिनहिंरघुबीरबानकी सठसूनेहरिआनेहिमोही अध
मनिलजलाजनहींतोही॥ आपुहिंसुनिखद्योतसम रामहिभानुसमान॥परु
षबचनसुनिकाढ़िअसि बोलाअतिखिसिआन॥ सीतातैममकृतअपमाना कटिहौ
तवसिरकठिनकृपाना नाहितसपदिमानुममबानी सुमुखिहोतिनतजीवनहानी स्याम
सरोजदामसमसुंदर प्रभुभुजकरिकरसमदसकंधर सोभुजकंठकितवअसिघोरा॥
सुनुसठअसप्रवानपनमोरा चंद्रहासहरममपरितापं रघुपतिविरहअनलसंजातं
॥ सीतलनिसितबहसिबरधारा कहसीताहरममदुखभारा सुनतबचनपुनिमारनधा
वा मयतनयाकहिनीतिबुझावा कहेसिसकलनिसिचरिबुलाई सीतहिंबहुबिधित्रासहुजाई

सुंदर
६

भई कहि सो प्रगट होत किनि भाई तब हनुमंत निकट चलि गयेउ फिरि बैठि मन बिसमय
भयेउ रामदूत मैं मातु जानुकी सत्य सपथ करुनानिधान की यह मुद्रिका मातु मैं आनी
दीन्हि राम तुम्ह कहुं सहिदानी नर बानरहु संग कहु कैसे कहि कथा भई संगति जैसे ॥१२॥ दो॰
कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु
कर दास ॥ ॥ हरिजन जानि प्रीति अति गाढी सजल नयन पुलकावलि बाढी बूडत
बिरह जलधि हनुमाना भयेउ तात मो कहुं जलजाना अब कहु कुसल जाउं बलिहारी अ
नुज सहित सुख भवन खरारी कोमल चित कृपाल रघुराई कपि केहि हेतु धरी निठुराई
सहज बानि सेवक सुखदायक कबहुं कि मोहि सुमिरत रघुनायक कबहुं नयन मम सीत
ल ताता होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता बचन न आव नयन भरि बारी अहो नाथ मोहि
निपट बिसारी देखि परम बिरहाकुल सीता बोले कपि मृदु बचन बिनीता मातु कुस
ल प्रभु अनुज समेता तव दुख दुखी सुकृपा निकेता जनि जननी मानहु जिय ऊना तुम

नी सुनत बचन पद गहि समुझायसि प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनायसि निसि न अनल मिल सुनि
सुकुमारी अस कहि सो निज भवन सिधारी कह सीता बिधि भा प्रतिकूला मिलिहि न पाव
क मिटहि न सूला देखियत प्रगट गगन अंगारा अवनि न आवत एको तारा पावकमय स
सि स्रवत न आगी मानो मोहि जानि हतभागी सुनहु बिनय मम बिटप असोका सत्य नां
म करु हरु मम सोका नूतन किसलय अनल समाना देहु अगिनि जनि करहु निदाना देखि
परम बिरहाकुल सीता सो छिन कपिहि कलप सम बीता॥१२॥ सो॥ कपि करि हृदय बिचार
दीन्ह मुद्रिका डार तब जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ॥ चौ०॥ तब देखी
मुद्रिका मनोहर राम नाम अंकित अति सुंदर चकित चितै मुद्रिका पहिचानी हरष बिषाद
हृदय अकुलानी जीति को सकै अजय रघुराई माया ते असि रचि नहि जाई सीता मन बिचार क
र नाना मधुर बचन बोले हनुमाना रामचंद्र गुन बरनै लागा सुनतहि सीता कर दुख भा
गा लागी सुनै श्रवन मन लाई आदि ते सब कथा सुनाई श्रवनामृत जेहि कथा

प्रभुआयसुनहिंरामदुहाई कछुकदिवसजननीधरुधीरा कपिनसहितऐहैंरघुवीरा नि
सिचरमारितुमहिंलेजेहैं तिहुंपुरनारदादिजसगेहैं हैसुतकपिसवतुमहिसमाना जातुधा
नअतिभटबलवाना मोरेहृदयपरमसंदेहा सुनिकपिप्रगटकीनिजदेहा कनकभूध
राकारशरीरा समरभयंकरअतिबलवीरा सीतामनभरोसतबभयेऊ पुनिलघुरूपपवनसु
तलयेऊ ॥ दो० ॥ सुनुमातासाखामृगनहिं महिंबलबुद्धिविसाल प्रभुप्रतापतेगरुडहिं
खाइपरमलघुव्याल ॥ चौ० ॥ मनसंतोषसुनतकपिवानी तनुअतिपुलकितनयनमहकपा:
नी भक्तिप्रतापतेजबलसानी आसिषदीनरामप्रियजानी अजरअमरगुननिधिसुतहो
हू करहिंसदारघुनायकछोहू करहिंकृपाप्रभुअससुनिकाना निर्भरप्रेममगनहनुमाना
बारबारनावहिंपदसीसा बोलेबचनजोरिकरकीसा अबकृतकृत्यभयेउमैमाता आसि
षतवअमोघविख्याता सुनहुमातुमोहिअतिसयभूखा लागिदेखिसुंदरफलरूखा सुनुसु
तकरहिंविपिनरखवारी परमसुभटरजनीचरभारी तिनकरभयमातामोहिनाहीं जौंतु

तेप्रेमरामकहंदूना॥१४॥दो०॥रघुपतिकेरसंदेसअबसुनुजननीधरिधीर असकहि
कपिगदगदभयौ भरेबिलोचननीर॥चौ०॥ रामबियोगकहातवसीता मोकहँसक
लभयेबिपरीता नवतरुकिसलयमनहुकृसानु कालनिसासमनिसिससिभानु कुवल
यबिपिनकुंतबनसरसा बारिदतपततेलजनुबरसा जेहितरहेकरतसोईपीरा उरग
स्वाससमत्रिबिधिसमीरा कहतेहुकछुदुखघटनहिहोई काहिकहौंयहजाननकोई तत्वप्रे
मकरममअरुतोरा जानतप्रियाएकमनमोरा सोमनरहितसदातोहिपाही जानुप्रीतिर
सइतनेमाहीं प्रभुसंदेसुसुनतवेदेही मगनप्रेमतनसुधिनहितेही कहकपिहृदयधीर
धरमाता सुमिरिरामसेवकसुखदाता उरआनहुरघुपतिप्रभुताई सुनिममबचनतज
हुकदराई॥१५॥दोहा॥निसिचरनिकरपतंगसमरघुपतिबानकृसानु जननीहृद
यधीरधरुजरेनिसाचरजानु॥ . । जौंरघुबीरहोतसुधिपाई करतेनहिंबिलंबर
घुराई रामबानरबिउयेंजानकी तमबरूथकहंजातुधानकी अबहिंमातुमेंजातलिवाई

लंकर
८

गहिगहिकपिमर्दहिनिजअंगा तिनहिनियमतिमाहिसतनवाजा मिडैवुलैमानमुक्ताकाराजा ॥ पुछिकमार चहामकजाई ताहिलकदुरामखुमाई उठिबहुरेसिकीमेकिबहुमगर जौमनलमाए प्रभोजनजायाम॥२॥ दो०॥ ब्रह्मअस्त्रतेनेइसांधेउकपिमनकीनविचार जौनब्रह्मसरमानउमहिमाजाइअपार ॥ चौ०॥ ब्रह्मबचनमारेमेसोऊ तामेवरचरणतेबेकसहोऊ ब्रह्मबानकपिकहुंतेहिमारा परतिबारकटकसंघारा तेहिजानाकपिमर्कुंतभयउ नागपाशबांधिलेगयउ जासुनामजपुसनहुभवानी भवबन्धनकाटहिंनरज्ञानी तासुदूतकेबंधनतरआवा प्रभुकाजलागिकपिहिबन्धावा कपिबन्धनसुनिनिशिचरधाये कौतुकलागिसभासबआये दसमुखसभादीखकपिजाई कहिनजाइकछुअतिप्रभुताई करजोरेसुरदिशपबिनीता भृकुटिबिलोकहिसकलसभीता देखिप्रतापनकपिमनसंका जिमिअहिगनमहंगरुडअसंका॥२॥ तेहिरावणकपिहिविलोकिदशनन बिहसिकहादुर्बाद सुतवधसुरतकीनपुनिउपजाहृदयबिषाद॥ दो०॥ कहिलंकेसकवनतैंकीसा केहिकेबलघालेहिबनखीसा किधौंश्रवणसुनेनहिं

मनसंतोषमनहुमनमाहीं॥१७॥दोहा॥देखिबुद्धिबलनिपुनकपिकहेउजानकीजाहु रघुपति
चरनहृदयधरि तातमधुरफलखाहु॥चौपई॥चलेउनाइसिरपैठेउबागा फलखाएसितरु
तोरैलागा रहेतहांबहुभटरखवारे कछुमारेसिकछुजाइपुकारे नाथएकआवाकपिभारी ॥
तेहिअसोकबाटिकाउजारी खाएसिफलअरुबिटपउपारे रच्छकमर्दिमर्दिमहिडारे ॥
सुनिरावनपठयेभटनाना तिन्हहिदेखिगर्जेउहनुमाना सबरजनीचरकपिसंघारे गयेपुका
रतकछुअधमारे पुनिपठेउतेहिअछकुमारा चलाउसंगलैसुभटअपारा आवतदेखिबिटप
गहितरजा ताहिनिपातिमहाधुनिगरजा॥१८॥दोहा॥कछुमारेसिकछुमर्देसिकछुमिलये
सिधरिधूरि कछुपुनिजाइपुकारेप्रभुमर्कटबलभूरि॥१८॥चौ॥सुनिसुतबधलंकेसरिसाना
पठएसिमेघनादबलवाना मारेसिजनिसुतबांधेसिताही देखिअकपिहिकहांकरआही चलाइंद्रजि
तअतुलितजोधा बंधुनिधनसुनिउपजाक्रोधा कपिदेखादारुनभटआवा कटकटाइगरजा
अरुधावा अतिबिसालतरुएकउपारा बिरथकीन्हलंकेसकुमारा रहेमहाभटताकेसंगा ॥

सुंदर
२

रावन सुनहु मान तजि मोर सिखावन देखहु तुम निज कुलहि बिचारी भ्रम तजि भजहु
भगत भय हारी जाकें डर अति काल डेराई जो सुर असुर चराचर खाई तासें बैर कबहुँ न
हि कीजे मोरे कहे जानकी दीजे ॥१८॥ दोहरा॥ प्रनतपाल रघुबंसमनि करुनासिंधु खरारि
गए सरन प्रभु राखिहै तव अपराध बिसारि ॥२२॥ राम चरन पंकज उर धरहू लंका अचल
राज तुम करहू रिषि पुलस्ति जस बिमल मयंका तेहि कुल ससि जिन होहु कलंका राम नाम
बिनु गिरा न सोहा देखु बिचारि त्यागि मद मोहा बसन हीन नहि सोह सुरारी सब भूषन भूषि
त बर नारी राम बिमुख संपति प्रभुताई गई रही पाइ बिनु पाई सजल मूल जेहि सरितन्ह नाही
बरषि गये पुनि तबहि सुखाही सुनु दसकंठ कहौं पन रोपी राम बिमुख त्राता नहि कोपी संक
र सहस बिस्नु अज तोही सकहि न राखि राम कर द्रोही ॥२३॥ दोहरा॥ मोह मूल बहु सूल प्रद
त्यागहु तम अभिमान॥ भजहु राम रघुनायकहि कृपासिंधु भगवान॥ चौपई॥ जदपि का
हि कपि अति हित बानी भगति बिबेक बिरति नय सानी बोला बिहसि महा अभिमानी

मोही देखौं अति असंक सठ तोही मारे निसिचर केहि अपराधा कहु सठ तोहि न प्रानकि
बाधा नयको लेहु मानसु असमा मनमहं सुमिरि राम भय पाना सुनु रावन ब्रह्मांड निका
या पाइ जासु बल बिरचति माया जाके बल बिरंचि हरि ईसा पालत हरत सरजत दससीसा
जा बल सीस धरत सहसानन अंडकोस समेत गिरि कानन धरै जो बिबिध देह सुरत्रा
ता तुम्ह से सठन्ह सिखावन दाता हर कोदंड कठिन जेहि भंजा तेहि समेत नृप दल मद गंजा
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली बधे सकल अतुलित बलसाली ।।दो।। जाके बल लवलेस
ते जितेउ चराचर झारि।। तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारी [illegible] ।। जानौं मैं तु
म्हारि प्रभुताई सहसबाहु सन परी लराई समर बालि सन करि जसु पावा सुनि कपि बचन बिह
सि बिहरावा खायेउ फल प्रभु लागी भूखा कपि सुभाव ते तोरेउ रूखा सबके देह परम
प्रिय स्वामी मारहिं मोहि कुमारग गामी जिन मोहि मारा ते मैं मारा तेहि पर बाधेउ तनय
तुम्हारा मोहि न कछु बाधे कर लाजा कीन चहौं निज प्रभु कर काजा बिनती करौं जोरि कर

सुंदर
१०

भीत निसाचर नारी॥२५॥ दो० ॥ हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास॥ अट्टहास करि गर
जे कपि बढ़ि लाग अकास॥ चौ० ॥ देह बिसाल परम हरुआई॥ मंदिर तें मंदिर चढ़ि धाई॥ जरै न
गर भे लोग बिहाला॥ झपट लपट बहु कोटि कराला॥ तात मात सब करहिं पुकारा॥ इहि अवसर को
हमहि उबारा॥ हम जो कहा यह कपि नहि होई॥ बानर रूप धरे सुर कोई॥ साधु अवग्या कर फल ऐसा॥
जरै नगर अनाथ कर जैसा॥ जारा नगर निमिष इक माहीं॥ एक बिभीषन कर ग्रह नाहीं॥ ता कर दू
त अनल जेहि सिरजा॥ जरा न सो तेहि कारन गिरिजा॥ उलटि पलटि लंका सब जारी॥ कूदि परा पुनि सिंधु
मझारी॥२६॥ दो० ॥ पूछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि॥ जनकसुता कै आगे ठाढ़ु
भयो कर जोरि॥ चौ० ॥ मातु मोहि दीजै कछु चीन्हा॥ जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा॥ चूड़ामनि उतारि त
ब दयऊ॥ हरष समेत पवनसुत लयऊ॥ कहेउ तात अस मोर प्रनामा॥ सब प्रकार प्रभु पूरनकामा॥
दीनदयाल बिरद संभारी॥ हरहु नाथ मम संकट भारी॥ तात सक्रसुत कथा सुनायहु॥ बान प्रता
प प्रभुहि समुझायहु॥ मास दिवस महं नाथ न आवा॥ तौ पुनि मोहि जियत नहि पावा॥ कहु कपि

मिला हमहिं कपि बड़ गुर ग्यानी। मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही। उ
लटा होइहि कह हनुमाना। मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना। सुनि कपि बचन बहुत खिसियाना। बेगि
न हरहु मूढ़ कर प्राना। सुनत निसाचर मारन धाये। सचिवन सहित बिभीषण आये। नाइ सीस
करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिय दूता। आन दंड कछु करिय गोसांई। सबहिं कहा मंत्र
भल भाई। सुनत बिहसि बोला दसकंधर। अंग भंग करि पठवहु बंदर॥२४॥ दोहा॥ कपि कै ममता
पूंछ पर सबहि कहउ समुझाई॥ तेल बोरि पट बांधि पुनि पावक देहु लगाई॥ चौपाई॥ पूंछहीन बानर
जब जाइहि। तब सठ निज नाथहि लै आइहि। जिन्ह कै कीन्हेसि बहुत बड़ाई। देखौं मैं तिन्ह कै प्रभुता
ई। बचन सुनत कपि मन मुसुकाना। भई सहाय सारद मैं जाना। जातुधान सुनि रावन बचना। ला
गे रचन मूढ़ सोइ रचना। रहा न नगर बसन घृत तेला। बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपि खेला। कौतुक कहं आये
पुरबासी। मारहिं चरन करहिं बहु हांसी। बाजहिं ढोल देहिं सब तारी। नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी।
पावक जरत देखि हनुमंता। भयेउ परम लघुरूप तुरंता। निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारी। भई स

संवत
११

कृपास्पद देखी रामकृपा भगवान विशेषी मातकजकी नेउहनुमाना राखेउ सकल कपिन कर
प्राना सुमिरत सीव बहुरि उहि मिलेउ कपिन सहित रघुपति पहँ चलेउ रामकपिन कहँ धा
वन देखा किये काज उर हरष विशेषा [illegible] फिर मिले वै हैं भाई पवे सकल कपिन कर सनमा
न ॥ [illegible] ॥ दोहा ॥ सीते सहित तमे देसकल रघुपति कहनापुञ्ज ॥ [illegible] कुमार सुनायक सकुमल दे
विपद [illegible] ॥ [illegible] सब नाथ कहे सुनु रघुराया जाय नाथ कर हनुमदाया साहित सप्रभ
कुशल निरन्तर सुरनर मुनि सब के हित ऊपर [illegible] विभव सो गुणसागर मास सुपवाभे
हुं लोक उजागर प्रभु की कृपा भये उ सब काज जन्म हमारे सफल भा आज नाथ पवन सुत की
न जो करणी [illegible] जाइ न बरणी पवन तनय के चरित सुहाये जामवन्त रघुपतिहि
सुनाये सुनि कृपालु उहि हृदय लगाये जानि सुभट रघुपति मन भाये कहहु तात केहि भांति जा
नकी करति रहति रछ्या प्राण की ॥ [illegible] ॥ नाम पाहरु दिवस निशि ध्यान तुमार कपाट
लोचन निज पद जंत्रित जाहि प्राण केहि बाट ॥ [illegible] ॥ चलत मोहि चूरामणि दीन्ही रघुप

केहिबिधिरासैंप्राना तुम्हतातकहतअबजाना तवहिंदेखिसीतलभईछाती पुनिमो
कहंसोइदिनराती॥२३॥दोहा॥जनकसुतहिंसमुझाइकरि बहुबिधिधीरजदीन॥ चरन
कमलसिरनाइकपिगवनरामपहंकीन॥चौपई॥चलतमहाधुनिगर्जेउभारी गर्भस्त्रवे
उसुनिनिसिचरनारी लांघिसिंधुयहिपारहिआवा सबदकिलकिलाकपिनसुनावा हर्षेस
बबिलोकिहनुमाना नूतनजन्मकपिनतबजाना मुखप्रसन्नतनतेजबिराजा कीन्हेः
रामचंद्रकरकाजा मिलेसकलअतिभयेसुखारी तलफतमीनपाइजिमिबारी चलेहरषि
रघुनायकपासा पूछतकहतनवलइतिहासा तवमधुबनभीतरसबआये अंगदसहित
मधुरफलखाये रखवारेजबवरजनलागे मुष्टिप्रहारकरतसबभागे॥२४॥दोहा॥जाइपुका
रेतेसवलतेवनउजाररघुवराज॥सुनिसुग्रीवहरषकपिकरआयेप्रभुकाज॥चौपई॥जौनहोत
सीतासुधिपाई मधुबनकेफलसकहिंकखाई इहिबिधिमनबिचारकरराजा आइगयेकपिस
हितसमाजा आइसवहिंनायेउपदसीसा मिलेसवनअतिप्रेमकपीसा पूछेउकुसलः

प्रतिउपकार करौं का तोरा सनमुख होइ न सकत मन मोरा सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं दे
खेउँ करि विचार मन माहीं पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता लोचन नीर पुलक अति गा
ता॥३२॥दोहा॥सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत॥चरन परेउ प्रेमा
कुल त्राहि त्राहि भगवंत॥चौपाई॥बार बार प्रभु चहत उठावा प्रेम मगन तेहि उठन न भा
वा प्रभु कर पंकज कपि के सीसा सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा सावधान मन करि पुनि सं
कर लागे कहन कथा अति सुंदर कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा कर गहि परम निकट बै
ठावा कहु कपि रावन पालित लंका केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका प्रभु प्रसन्न जाना हनु
माना बोले बचन बिगत अभिमाना साखामृग कै बड़ि मनुसाई साखा तें साखा पर जाई॥
नांघि सिंधु हाटकपुर जारा निसिचर गन बधि बिपिन उजारा सो सब तव प्रताप रघुराई॥
नाथ न कछु मोरि प्रभुताई॥३३॥दोहा॥ता कहँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल
तव प्रताप बड़वानलहिं जारि सकै खलु तूल॥चौपाई॥सुनत बचन प्रभु बहु सुख माना॥

कहायप्रकसनकेरी। कननमैहिहृदउमनिकेतीनो रघुपतिहृदयहरखप्रेमलोचनो नाथजुगल
लोचनभरिबारी बचनकहे उककुजनककुमारी अनुजसमेतगहेहु प्रभुचरना दीनबं
धुप्रनतारतिहरना मनक्रमबचनचरनअनुरागी केहिअपराधनाथमोहित्यागी अ
वगुनएकमोरमैजाना बिछुरतप्राननकीनपयाना नाथसुनयनन्हकोअपराधा निः
सरतप्रानकरहिहठबाधा बिरहअगिनतनतूलसमीरा स्वासजरेछनमाहिसरीरा न
यनश्रवैजलनिजहितलागी जरैनदेहपावबिरहागी सीताकैअतिबिपतिबिसाला बि मिमिषन
नहीकहेभलदीनदयाला॥ दोहा॥ निमिषकरुनानिधिजाहिकल्पसमबीत॥ बेगिचेलप्र
भुआनिय भुजबलखलदलजीत॥ चौपाई॥ सुनिसीतादुखप्रभुसुखअयना भरिआयेहोराजी
वनयना बचनकायमनममगतिजाही सपनेहुबिपतिकिबाहियताही कहिहनुमानबि
पतिप्रभुसोई जबतवसुमिरनभजननहोई केतिकबातप्रभुयातुधानकी बेगिचलिय
प्रभुआनियजानकी सुनुकपितोहिसमानउपकारी नहिकोउसुरनरमुनितनुधारी ३

सुंदर
१२

बैदेही फरके बाम अंग शुभ तेही जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई असगुन भयो रावनहि सोई च
लाकटक को बरनै पारा गरजहिं बानर भालु अपारा नख आयुध गिरि पादपधारी चले गग
न महि इच्छाचारी केहरि नाद भालु कपि करही डगमगाहि दिग्गज चिक्करही ।३५। छं० चि
करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे मन हरष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किंन
र दुख टरे कटकटहिं मरकट बिकट भट बहु कोटि कोटिन धावहीं जय राम प्रबल प्रताप कोस
लनाथ गुन गन गावहीं सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहि मोहई गहि दसन पुनि
पुनि पीठ कमठ कठोर सो किमि सोहई रघुबीर रुचिर प्यान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी जनु क
मठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी । एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे साग
र तीर जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ।। दो० ३५ ।। उहां निसाचर रहहीं ससं
का जब ते जारि गयो कपि लंका निज निज गृह सब करहिं बिचारा नहि निसिचर कुल के
र उबारा जासु दूत बल बरनि न जाई तेहि आये पुर कवन भलाई अति सभीत सुनि पुर

नमकमनघघनदातनिजजाना सोगुपवनसलवसमस्महूला देहेमजनुमवहंसरवमलः
नाघभक्तिप्रतिमघघनुयायानी देहकपौरशिवममभावनी सुनिश्रुमघजभ्रमलकपि
यानी एवमसुमनवकहेतुभवानी उमारामसुमनवजिनलाना नाहिभजनतजिमवकमा
ना यहसमवादजामुउरआवा रघुपतिभक्तिकरतानेइयावा सुनिश्रुभवचनकहेहँवीरपदे
श अवजवअवभ्रमपालुसरकसेसा मवरघुपनिकयिपतिहिं बुलावा कहाचलनवारकरहु
वमावा यवविलेवकेहिकारसकीजै तेरतकपिनभाहैयायसदीजै केमहकेविसुमनव
हुवरदे नमनैभवनचलेसुरहरपे ॥३४॥ [illegible] कपिपतिकेगिबुलायेउआवेसपवद
च नानावरनमनुलवलवानरभालुवरूथ ॥ [illegible] ॥ अभपदपंकजनावहिंसीसा अजन
हिं भालुमहावलकीमा देखिरामसकलकपिसेना चितलकृपाकरि राजिवनैना रामक
पावलपाइकपिंदा भयेपंखजुतमनहुंगिरिंदा हरिषरामतवकीनपयाना सगुनभयेसुंदर
सुभनाना आसुसकलसमंगलमयकीती तासुपयानसगुनयहनीती अभपयानजाना

सुंदर
१५

नन्ताही करका करके हिलेहि माही॥३२॥ दोहरा॥ हरिविवेकगुरु तीन जौं बोलहिं प्रियवचन
राजधर्म तनु तीन करहोइ वेगिहिं नास॥ चौपाई॥ सोइ रावन कहं बनी सहाई अस्तुतिकरहिं
सुनाइ सुनाई अवसर जानि बिभीषन आवा भ्रातचरन सीस तेहिं नावा पुनि सिरनाइ बैठ
निज आसन बोला बचन पाइ अनुसासन जौ कृपाल पूछेहु मोहि ताता मति अनुरूप कहउ
हित ताता जो आपन चाहइ कल्याना सुजसु सुमति सुभगति सुख नाना सो परनारि लिलार
गोसाईं तजउ चौथि के चंद कि नाईं चौदह भुवन एक पति होई भूतद्रोह तिष्ठइ नहिं सोई गुन
सागर नागर नर जोऊ अलप लोभ भल कहइ न कोऊ निज निज मनहर पाप न कोऊ गति हि पुरा
न मे देवहइ जोऊ अपयश मनसु सुखराख रदोऊ लोकरचना समान कि नहिं होऊ॥३८॥ दोहरा॥ काम
क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ। सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत॥ चौपाई॥
तात राम नहिं नर भूपाला भुवनेस्वर कालहु केकाला ब्रह्म अनामय अज भगवंता व्यापक
अजित अनादि अनंता गो द्विज धेनु देव हितकारी कृपासिंधु मानुषतनुधारी जन रंजन भंजन

जन बानी मन्दोदरी हृदय अकुलानी रहसि जोरि कर पति पद लागी बोलि बचन नीति
रस पागी कंत बैर हरि सन परिहरहू मोर कहा अति हित हिय धरहू समुझत जासु दूत कि
रनी स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी तासु नारि निज सचिव बुलाई पठवहु कंत जो चहहु भला
ई तव कुल कमल बिपिन दुखदाई सीता सीत निसा सम आई सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें
हित न तुमार संभु अज कीन्हें ॥३५॥ [illegible] राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक ॥३
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतन करहु तजि टेक ॥३६॥ श्रवन सुनी सठ ता कर बानी
बिहसा जगत बिदित अभिमानी सभय सुभाव नारि कर साचा मंगल महिं भय मन अति काचा जो
आवै मरकट कटकाई जियहिं बिचारे निसिचर खाई कंपहिं लोकप जाके त्रासा तासु ना
रि सभीत बड़ि हासा अस कहि बिहसि ताहि उर लाई चलेउ सभा ममता अधिकाई मंदोद
री हृदय कर चिंता भयो कंत पर बिधि बिपरीता बैठेउ सभा खबरि असि पाई सिंधु पार सेन
सब आई बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ते सब हँसे मष्ट करि रहहू जितेहु सुरासुर तब श्र

सुंदर
१५ तात चरन गहि मांगहुं राखहु मोर दुलार॥ सीता देहु राम कहुं अहित न होइ तुम्हार॥ चौपाई॥
बुध पुरान श्रुति संमत बानी। कही बिभीषन नीति बखानी। सुनत दसानन उठा रिसाई।
खल तोहि निकट मृत्यु अब आई। जिअसि सदा सठ मोर जिआवा। रिपु कर पच्छ मूढ तोहि भावा।
कहसि न खल अस को जग माहीं। भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं। मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती।
सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती। अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा।
उमा संत कै इहै बड़ाई। मंद करत जो करै भलाई। तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा। राम भजे हित
नाथ तुम्हारा। सचिव संग लै नभ पथ गयेऊ। सबहि सुनाइ कहत अस भयेऊ॥ ४१॥ दो॥ राम सत
संकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि। मैं रघुनायक सरन अब जाउं देहु जिन खोरि॥ चौप
ई॥ अस कहि चला बिभीषन जबहीं। आयुहीन भै निसचर तबहीं। साधु अवग्या तुरत भवानी।
कर कल्यान अखिल कै हानी। रावन जबहिं बिभीषन त्यागा। भयो बिभव बिनु तबहिं अभागा।
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं। देखिहौं जाइ चरन जलजाता।

समह

ज्यागात बेद धर्म रचकतुर जाना नाहिं वेद जैना दुख माया बलएतात नभजान रघुना था ऽ
हि तुन्ना पवभजक हुं बैवे है। भजहु रामबिनु काम न कनेही। हर सभागये सब नाहिं नन बना विश्व
देह कृत तब सडे हिन्नाया आनहुन्नाम तेयताप जमाबन सो इ प्रभु नगर हरतुकजि बीबन
ग्ना दोहरा॥ बार बार पद लाग उं बिनय करौं दसरीसा॥ परिहु बिमान मोह मद भजहु को स
ला ही सा॥ देहरा॥ मुनिपुलस्त निज सिष्य सन कहि पठइ यह बात॥ तुरत सो मैं प्रभु सन कहि
हि. पाय सुअवसर तात॥ चाय ई॥ माल्यवंत अतिसचिव सयाना तासुबचन सुनि अति सुखमा
ना तात अनुज तव नीति बिभूसन सो उर धरहु जो कहत बिभीसन रिपु उतकर पकहत सठ
दोऊ दूर न करहु इहां ते कोऊ माल्यवंत गृह गयउ बहोरी कहै बिभीसनु पुनि कर जो
री सुमति कुमति सब के उर रहहीं नाथ पुरान निगम असकहहीं जहां सुमति तहं संपति
नाना जहां कुमति तहां बिपति निदाना तब उर कुमति बसी बिपरीता हित अनहित मानहु
रिपु प्रीता कालराति निसिचर कुल केरी तेहि सीता पर प्रीति घनेरी॥ ३०॥ दोहरा॥ ३३४६

सुंदर
१६

तबहीं जन्मकोटिअघनासौंतबहीं पापवन्तकरसहजसुभाऊ भजनमोरतेहिभावनकाऊ ३
जौंपैदुष्टहृदयसोहोई मोरेसन्मुखआवकिसोई निर्मलमनजनसोमोहिपावा मोहिकपटछल
छिद्रनभावा भेदलेनपठवादससीसा तबहुंनकछुभयहानिकपीसा जगमेंसखानिसाचरजे
ते लछमनहनहिनिमिषमहंतेते जौंसभीतआवासरनाई रखिहौंताहिप्रानकीनाई ॥४॥८
दो०॥उभयभांतितेहिआनहु हंसिकहिकृपानिधान। जयकृपालकहिकपिचलेअंगदहनूसमे
त॥ चौ० ४६॥सादरतेहिआगेकरबानर चलेजहांरघुपतिकरुनाकर दूरहिंतेदेखेद्वौभ्राता नय
नानंददानकेदाता बहुरिरामछबिधामबिलोकी रहाठठकिएकटकपलरोकी भुजप्रलम्बकं
जारुनलोचन स्यामलगातप्रनतभयमोचन सिंहकन्धआयुदउरसोहा आननअमितमदन
मनमोहा नयननीरपुलकितअतिगाता मनधरिधीरकहामृदुबाता निसिचरबंसजनम
सुरत्राता नाथदसाननकरमैंभ्राता सहजपापप्रियतामसदेहा यथाउलूकहितमपरनेहा
॥४५॥ दो० ॥ श्रवनसुजसुनिआयउंप्रभुभंजनभवभीर॥ त्राहित्राहिआरतिहरनस

अरुनमृदुलसेवकसुखदाता जेपदपरसितरीरिषिनारी दंडककाननपावनकारी जेप
दजनकसुताउरलाये कपटकुरंगसंगधरधाये हरउरसरसरोजपदजेई अहोभाग्यमें
देषिहउँतेई॥४२॥दोहरा॥ जिन्हपायन्हकेपादुका भरतरहेमनलाय॥तेपदआजुबिलोकिहौं इन्ह
नयनन्हअबजाय॥चौपई॥ एहिबिधिकरतसप्रेमबिचारा आयेउसपदिसिंधुयेहिपारा कपिन्हबि
भीषनआवतदेषा जानेउकोउरिपुदूतबिसेषा ताहिराखिकपीसपहिंआये समाचारस
बताहिसुनाये कहसुग्रीवसुनहुरघुराई आवामिलनदसाननभाई कहप्रभुसखाबूझियेका
हा कहकपीससुनहुनरनाहा जानिनजाइनिसाचरमाया कामरूपकेहिकारनआया भेद
हमारलेनसठआवा राखियबांधिमोहिअसभावा सखानीकितुम्हनीतिबिचारी ममपनसर
नागतभयहारी सुनिप्रभुबचनहरषहनुमाना सरनागतबच्छलभगवाना॥४३॥दो
हा॥ सरनागतकहुंजेतजहिं निजअनहितअनुमानि॥ तेनरपांवरपापमय तिन्हहिबिलोकतहानि
॥चौपई॥ कोटिबिप्रबधलागहिंजाहू आयेसरनतजौंनहिंताहू सनमुखहोइजीवमोहि

बिधभवसूला। मैनिसिचरअतिअधमसुभाऊ। सुभआचरनकीन्हनहिंकाऊ। जासुरूपमुनि
ध्याननआवा। तेप्रभुहरषिहृदयमोहिलावा॥४७॥ दो॰ अहोभाग्यममअमितअति
रामकृपासुखपुंज। देखेउंनयनबिरंचिसिवसेव्यजुगलपदकंज। चौ॰ पइ॥ सुनहुसखानि
जकहउंसुभाऊ। जानभुसुंडिसंभुगिरिजाऊ। जौंनरहोइचराचरद्रोही। आवैसभ
यसरनतकिमोही। तजिमदमोहकपटछलनाना। करौंसद्यतेहिसाधुसमाना। जननीजन
कबंधुसुतदारा। तनुधनभवनसुहृदपरिवारा। सबकैममताताग बटोरी। ममपदमन
हिबांधिबटडोरी। समदरसीइच्छाकछुनाहीं। हरषसोकभयनहिंमनमाहीं। अससज्जन
ममउरबसकैसे। लोभीहृदयबसतधनजैसे। तुमसारिखेसंतप्रियमोरे। धरौंदेहनहिंआन
निहोरे॥४८॥ दो॰ सगुनउपासकपरहितनिरतनीतिदृढनेम। तेनरप्रानसमानमम
जिन्हकेद्विजपदप्रेम। चौपई॥ सुनुलंकेससकलगुनतोरे। तातेंतुमअतिसयप्रि
यमोरे। रामबचनसुनिबानरजूथा। सकलकहहिंजयकृपाबरूथा। सुनतबिभीषनप्रभुकी

बानी। नहिं अघात श्रवनामृत जानी। पद अंबुज गहि बारहिं बारा। हृदय समात न प्रेम अपारा
सुनिये देव सचराचर स्वामी। प्रनतपाल उर अंतरजामी। उर कछु प्रथम बासना रहेउ। प्रभु पद
प्रीति सरित सो बहेउ। अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा सिव मन भावनी। एवमस्तु क
हि प्रभु रनधीरा। मांगा तुरत सिंधु कर नीरा। जदपि सखा तव इच्छा नाहीं। मम दरस अमो
घ जग माहीं। अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा॥४९॥ दो० [illegible]॥ रा
वण क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड। जरत बिभीषन राखेउ दीन्हेउ राज अखंड॥ दो
हा। जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिये दस माथ। सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्ह रघुना
थ॥ चौपई॥ अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना। ते नर पसु बिनु पूंछ बिषाना। निज जन जानि ताहि
अपनावा। प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा। पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी। सर्बरूप सब रहित उदासी
बोले बचन नीति प्रतिपालक। कारन मनुज दनुज कुल घालक। सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि
बिधि तरिय जलधि गंभीरा। संकुल मकर उरग झष जाती। अति अगाध दुस्तर सब भांती १

सुंदर १९

नर्त्तो धन जितैके मिला जाइ जब अनुज सुमारा आनहि राम तिलक तेहि सारा रावणदूत तह महित कपिकाना कपिन बोधि दीने उदुरवनाना स्वदरिना सकोकाटैनलाने राम रूप पदी मीन बन्याहै एके हुनाथ की लकाटकाई कहन कोटि स्मान वर रिमन जाई नाना वरसाभमलु कपि धारी बिकटानन विसाल भयकारी जे सुग्रमवधे उदहे उपुर्बतोसा सकल कपिन्ह महं ते हि कपि बोरा अमित नाम भट कठिन कराला विपुल नाग बल तेज विसाला घन जिमि गर्जत तर्जत भाला देखियमानो काल कराला॥५४॥ बहुरूप बनचर पवन तिवल लेन कर सातनहि बसे सामाद्रिम रूपगोनादमरव्यकसमाद्रिम रूपकौ सफकगने आतिकायदेही युद्ध कान सदं लक रघुवर मधर इहि भांति प्रवल प्रताप रघुपति दीरबे हौ बहु बेर॥ द्विविद म येंद नील नल अंगदादि विकटारि दधिमुख केहरि कुमुद गवजामवन्त बलरासि॥ ये कपि सब सुग्रीव समाना इनसम कोटिन्ह गनै को नाना राम कृपा अतुलित बल तिन्हहीं तृन समान त्रयलोकहि गिनहीं अस मै स्रवन सुना दसकन्धर पदुम अठारह जूथप बंदर ॥

अन्धिफटक चहुंपास फिरावे बहुप्रकार मारगकढि सजो देनपुकारत तदपि मन्यावे ॥
हमार ह्रमानसकामा नाहिकोरहतधीरा की आना सुनिलदसरातोहिनिकटबुलावे ॥
स्याल्पगिहैविदीनकुउदे तबराकरदीजहुयहिपाती लखसबबचननोचुकुलघाती ॥
॥दोहरा॥ कहेहुमंसरापारमतुसम ममन्देसउदार ॥ सीलादेहुमिलहुसुनतुआवाकालनु
मार ॥ चौपई ॥ सुनतनमाइसलदमनपदमाथ चलीवरसानभुमगाधा कहतनामयशलेकाम्राव दू ३५
सम्हीकतिमनाचा हिंकिदसानननपकेकिवाना कहिहतनशकाअपनकुमालाता ॥
पुनिफकुरसविभीषसफेरी जसुमनपुआईअतिनेरी करनगराउलेवाराठन्याकी होइ
हिवचकरकोटश्रमभी पुनिफकुमालूकीसफटकाई वढिनचालमेरितनवलिआई तिनके
सीवनकररसवाग भयेमहुलचितलिधुविचारा कहुतपतिनकरवानवहोरी सिमके
हृदयचारमअतिमोरी ॥५३॥ दोहरा ॥ केमहमेटफिफिरगये सबरामउजान युगभोर ॥ कहहि
नाहिपुदसतेजबल करसकिनचितनतोर ॥ चौपई ॥ नायकफलकविपहेहुजैसे मानेहुसच

सुंदर
२०

हि रिझाय सठ जनि घालसि कुलखीस। राम विरोध न उवरसि सरन विस्नु अज ईस॥ ५ दोहा॥
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग। होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग॥ ५
चौपई॥ सुनत सभय मन मुख मुसुकाई। कहत दसानन सबहिं सुनाई। भूमि परा कर गहत
अकासा। लघु तापस कर बाग बिलासा। कह सुक नाथ सत्य सब बानी। समुझहु छाड़ि प्रकृति
अभिमानी। सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा। नाथ राम सन तजहु विरोधा। अति कोमल रघुबी
र सुभाऊ। यद्यपि अखिल लोक कर राऊ। मिलत कृपा प्रभु तुम पर करिहैं। उर अपराध न ए
को धरिहैं। जनकसुता रघुनाथहिं दीजे। इतना कहा मोर प्रभु कीजे। जब तेइ दीन कहा वैदेही।
चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही। चरन नाइ सिर चला सो तहां। कृपासिंधु रघुनायक जहां। करि प्रना
म निज कथा सुनाई। राम कृपा आपनि गति पाई। ऋषि अगस्त की साप भवानी। राछस भ
यउ रहा मुनि ग्यानी। बंदि राम पद बारहिं बारा। मुनि निज आश्रम कहँ पगु धारा॥ ५७॥ दोहा॥
विनय न मानत जलधि जड़ गये तीनि दिन बीत। बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्री

न्यफकटकमहं लोकपिन्माहीं जेमनलमहिंभीतेर समाहीं परमकोध मीं जहिंसवहाथ आयस
पैनदेहिं रघुनाथा सोचहिंसिंधु सहित जयध्याला पर हिंन नुधरकुधर बिशाला महेंजदेमिलः
वहिदमहीसा ऐसेषचनकहहिंसवकीसा गरजहिंतरजहिंसहजमअसेका मानहुंमसनच
हनषवलेखा ॥५५॥ दोहा ॥ सहज सुरकपिभालु सब पुनिसिरपरप्रभुराम ॥ रावणकालकों
टिकहे जीतसकहिंसंग्राम ॥ चौ॰ ॥ रामतेजबलबुधिविपुलाई सेषसहसत सकहिंनगाई
सकसरएकसोषसतसागर तवभ्रातहिंपुछेउ नयनागर तासुवचनसुनिसागरपाहीं मां
गतपंथकृपामनमाहीं सुनतवचनबिहंसादससीसा जौंअसमतिसहायकृतकीसा सह
जभीरुकरिवचनदृढाई सागरसनठानीमचलाई मूढमृषाकाबडाई रिपुबलबु
द्धिथाहपैयाई सचिवसभीतविभीषणजाके विजयविभूतिकहांजगताके सुनिखलवचनदू
तरिसबाढी समयबिचारिपत्रिकाकाढी रामानुजदीनीयहपाती नाथबचाइजुडावहुछाती
बिहंसिबामकरलीनीरावन सचिवबोलिसठलागबचावन ॥५६॥ दोहा ॥ बातनमनहि

२५२
२१

सुखाई उतरहि कटकु न मोरि बडाई प्रभु आग्या अपेल श्रुति गाई करहु बेगि जो तुम्हहि सोहाई॥ ५९
दोहा॥ सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ जेहि बिधि उतरै कपि कटक ता
त सो कहहु उपाइ॥ ५८ चौ०॥ नाथ नील नल कपि द्वौ भाई लरिकाई रिषि आसिष पाई तिन्ह के प
रस किये गिरि भारे तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे मै पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई करिहौं बल अनुमा
न सहाई एहि बिधि नाथ पयोधि बधाइय जेहि यह सुजस लोक तिहु गाइय एहि सर मम उत्तर तट
बासी हतहु नाथ खल नर अघ रासी सुनि कृपाल सागर मन पीरा तुरतहिं हरि राम रनधीरा दे
खि राम बल पौरुष भारी हरषि पयोनिधि भयो सुखारी सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा चर
न बंदि पाथोधि सिधावा॥ ६०॥ छंद॥ निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुबीर यह मत भायऊ यह च
रित कलिमल हर जथामति दास तुलसी गायऊ सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघु
पति गुन गना तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना॥ दोहा॥ सकल सुमंगल दायक
रघुनायक गुन गान सादर सुनहि ते तरहि भव सिंधु बिना जलजान॥ इति श्री रामचरितमानसे
सकल कलिकलुष बिध्वंसने [illegible] कांड [illegible] समाप्त [illegible]

ना॥ लछिमन बाण सरासन आनू। सोषौं बारिधि बिसिष कृसानू। सठ सन बिनय
कुटिल सन प्रीती। सहज कृपन सन सुंदर नीती। ममता रत सन ग्यान कहानी। अति लोभी
सन बिरति बषानी। क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा। ऊसर बीज बएँ फल जथा। अस कहि र
घुपति चाप चढावा। यह मत लछिमन के मन भावा। संधानेउ प्रभु बिसिष कराला। उठी उद
धि उर अंतर ज्वाला। मकर उरग झष गन अकुलाने। जरत जंतु जलनिधि जब जाने। कनक
थार भरि मनि गन नाना। बिप्र रूप आयउ तजि माना॥५८॥ दोहा॥ काटेहि पै कदली फरै को
टि जतन कोउ सींच॥ बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहि पै नव नीच॥ चौपई॥ सभय सिंधु ग
हि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे। गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कै नाथ
सहज जड करनी। तव प्रेरित मायाँ उपजाये। सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाये। प्रभु आयसु जेहि कहँ
जस अहई। सो तेहि भांति रहे सुख लहई। प्रभु भल कीन्ह मोहि सिष दीन्ही। मर्यादा पुनि तुम्हरी
कीन्ही। ढोल गंवार सूद्र पसु नारी। ये सब ताडन के अधिकारी। प्रभु प्रताप मैं जाब सु